# विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष २५६०, चैत्र पूर्णिमा, ११ अप्रेल, २०१७ वर्ष ४६ अंक १०

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx


**धम्मवाणी**

**पमादं अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो।**
**पञ्ञापासादमारुय्ह, असोको सोकिनिं पजं।**
**पब्बतट्ठोव भूमट्ठे, धीरो बाले अवेक्खति॥**

*-- धम्मपद २८, अप्पमादवग्गो*

जब कोई समझदार व्यक्ति प्रमाद को अप्रमाद से परे धकेल देता (अर्थात, जीत लेता) है, तब वह प्रज्ञारूपी प्रासाद पर चढ़ा हुआ शोकरहित हो जाता है। (ऐसा) शोकरहित धीर (मनुष्य) शोकग्रस्त (विमूढ़) जनों को ऐसे ही (करुण भाव से) देखता है जैसे कि पर्वत पर खड़ा हुआ (कोई व्यक्ति) धरती पर खड़े हुए लोगों को देखे।

## धम्मविमुत्ति, कुशीनगर (उ.प्र.) धर्म-यात्रा

**(धर्म-यात्रा के दौरान पुराने साधकों के लिए पूज्य गुरुजी का प्रवचन)**

मेरे प्यारे विपश्यी साधक-साधिकाओ!

आज हम एक ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान पर एकत्र हुये हैं, जहां एक महापुरुष की बहुत लंबी यात्रा पूरी हुई। अनगिनत कल्प पूर्व यह व्यक्ति ब्राह्मण सुमेध के नाम से एक तपस्वी था और उस समय संसार में दीपंकर नाम के सम्यक संबुद्ध उत्पन्न हुये थे। यह व्यक्ति उनके सम्पर्क में आया तो इसके मन में बहुत बड़ा धर्म-संवेग जागा-- "मैं भी इसी प्रकार सम्यक संबुद्ध बनूं तो मेरे द्वारा कितनों का कल्याण होगा।" इस धर्म-संवेग के आधार पर वह अपनी धर्म कामना दीपंकर सम्यक संबुद्ध के सामने प्रकट करता है।

अनेक लोग ऐसे होते हैं, जो किसी सम्यक संबुद्ध को देख करके मन में ऐसे भाव जगाते हैं कि यह व्यक्ति संसार का इतना कल्याण कर रहा है, मैं भी इस अवस्था पर पहुँच कर संसार का कल्याण कर सकूं; ऐसे भाव जागते हैं और वह अपनी भावना उस समय के सम्यक संबुद्ध के सामने प्रकट करता है तो सम्यक संबुद्ध देखते हैं कि यह व्यक्ति सचमुच इस लायक है या नहीं? अभी लायक नहीं है तो केवल मुस्कुरा कर रह जाते हैं। और देखते हैं कि लायक है; तो क्या इसमें लोक सेवा का जो ऐसा भाव जागा है, वह स्थायी है? या इस समय की परिस्थिति में जागा है, कल समाप्त हो जायगा? इसकी भावना में कितनी दृढ़ता है?

दूसरी बात यह देखते हैं कि इसमें कितनी क्षमता है? क्या क्षमता है? क्या पूर्व के अनेक जन्मों में इसने अपनी पारमिताएं पूरी की हैं? हां, तो कितनी? अगर उसने इतनी पारमितायें पूरी कर ली कि सम्यक संबुद्ध उस समय उसे विपश्यना सिखायें तो साधना करते-करते वह भवमुक्त हो जायगा, अरहंत हो जायगा, तब उसका भविष्य देखते हैं। यह व्यक्ति इस लायक है कि आज भी मुक्त हो सकता है, और फिर भी यह चाहता है कि मैं सम्यक संबुद्ध बनूं; यह समझते हुये कि सम्यक संबुद्ध बनने में वही पारमितायें कितनी बड़ी मात्रा में एकत्र करनी होती हैं, अनगिनत जन्मों तक काम करना होता है। पारमिताओं को अधिकाधिक पूरी करने में कितना समय लगता है! क्या इस व्यक्ति में सचमुच त्याग की यह भावना है? जो व्यक्ति उस अवस्था तक पहुँचा हुआ है, वह खूब समझता है कि मैं इसी वक्त इनकी शिक्षा से मुक्त अवस्था प्राप्त कर सकता हूँ। लेकिन उसके हाथ में आयी हुई मुक्ति वह त्यागता है। मेरे अकेले के मुक्त होने से क्या होगा? जैसे इन्होंने बोधिसत्त्व के रूप में अपने अनेक जन्मों में लोक कल्याण किया और अपनी पारमितायें बढ़ाते गये। अरे, मैं भी इसी प्रकार अनेक जन्मों में भले कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े, अपनी पारमिताओं को बढ़ाते-बढ़ाते-बढ़ाते उस अवस्था तक पहुँचूं कि जहां मैं सम्यक संबुद्ध हो जाऊं।

एक ओर बलिदान की यह भावना- हाथ में आयी हुई मुक्ति को त्यागता है, और दूसरी ओर अनेक प्राणियों के भले के लिये अनेक जन्मों का कष्ट सहने के लिये तैयार है। वे देखते हैं सचमुच यह व्यक्ति इस लायक है, तब उसका भविष्य देखते हैं- कितने समय के बाद यह व्यक्ति सम्यक संबुद्ध बन पायगा। तब उसे आशिर्वाद देते हैं और भविष्य-वाणी करते हैं कि इतने कल्पों के बाद इस घर में, इस नाम से जन्म ले करके तू सम्यक संबुद्ध बनेगा! तू कपिलवस्तु में शुद्धोधन के घर, महामाया की कोख से जन्म लेगा और उस समय सम्यक संबुद्ध बन पायगा। तब से यह व्यक्ति जन्म पर जन्म लिये जा रहा है, कभी इस योनि में, कभी उस योनि में। भिन्न-भिन्न योनियों में, उस योनि के लोगों को, उन प्राणियों को धर्म की ओर उन्मुख करने के लिये, उनमें धर्म की चेतना जगाने के लिये और अपनी पारमिताओं को और अधिक पुष्ट करने के लिये, कितना समय लगा? गिनती नहीं!! इतना समय लगने के बाद सिद्धार्थ गौतम के नाम से जन्म हुआ और शरीर के लक्षण देखने वालों ने कहा कि यह व्यक्ति घर में रहेगा तो चक्रवर्ती सम्राट होगा, घर छोड़ देगा तो सम्यक संबुद्ध होगा। उसे चक्रवर्ती सम्राट नहीं बनना था। उसे तो सम्यक संबुद्ध बनना था; सम्यक संबुद्ध बना।

'बोधगया' में बोधिवृक्ष के नीचे उसे सम्यक संबोधि प्राप्त हुई, मुक्त अवस्था प्राप्त हुई। इतने जन्मों तक लोक-सेवा ही लोक-सेवा, लोक-सेवा ही लोक-सेवा और जब २९ वर्ष की उम्र थी तब घर छोड़ा, ३५ वर्ष की अवस्था में सम्यक संबुद्ध हुआ। उसके बाद के ४५ वर्ष, रात-दिन लोक-सेवा ही लोक-सेवा। रात को केवल एक पहर (२.५ से ३.५ घंटे, दिन व रात ४-४ पहर के माने गये हैं) लेटते थे, सजग रह करके, सम्प्रज्ञानी रह करके, बाकी समय लोक-सेवा ही लोक-सेवा। इतनी करुणा, इस सारी करुणा के बल पर लोक-सेवा करते हुये इसी स्थान पर शरीर की च्युति हुई, जिसे 'महापरिनिर्वाण' कहा गया।

निर्वाण कहते हैं, उस अवस्था को जहां इंद्रियां काम करना बंद कर देती हैं। विपश्यना करते-करते वह अवस्था आती है। मन के विकार निकलते-निकलते वे सारे कर्म-संस्कार जो हमें अधोगति की ओर ले जायेंगे, जब वे सारे समाप्त हो जाते हैं, तब पहली बार निर्वाणिक अवस्था का साक्षात्कार होता है, तब वह व्यक्ति 'श्रोतापन्न' कहलाता है। अब उसके लिए अधोगति के द्वार बंद हो गये। वह अधिक से अधिक सात बार जन्म लेगा, उससे अधिक नहीं, उससे कम भले हो। और आगे बढ़ता है तो 'सकदागामी' होता है। अब वह केवल एक बार जन्म लेगा इस काम-लोक में, मानो मनुष्य लोक में या देव लोक में। 'अनागामी' हुआ तो काम-लोक में भी नहीं, अब केवल ब्रह्म-लोक में जन्म लेगा और उसके आगे डुबकी लगी, 'अरहंत' हुआ, तो सारे लोकों से मुक्त हो गया।

जब सम्यक संबुद्ध बनता है तो ये चारों अवस्थाएं एक के बाद एक प्राप्त होती हैं। सम्यक संबुद्ध हुआ, तो पूर्ण मुक्त हुआ, यह निर्वाण की

अवस्था। उसे 'सउपधिसेस निर्वाण' कहते हैं, अभी उपधि है, माने इस जन्म को आगे बढ़ाने वाले ऐसे कर्म-संस्कार जो नया जन्म तो नहीं देंगे, अरहंत हो गये, लेकिन इस जन्म में, इस शरीर का बोझ ढोने के लिए 'सउपधि', अभी उपधि है। और जब ऐसे व्यक्ति का, ऐसे महापुरुष का, ऐसे अरहंत की शरीर-च्युति होती है तब उसके बाद उसका कोई जन्म नहीं होगा। माने अनुपधिसेस - अब कोई उपधि नहीं, कोई जन्म नहीं। 'परिनिर्वाण' - परिपूर्ण निर्वाण हुआ। 'महापरिनिर्वाण'; क्योंकि ऐसे महापुरुष हैं, इसलिए 'महापरिनिर्वाण' कहा गया, जिसे उस व्यक्ति ने इस स्थान पर प्राप्त किया।

उस व्यक्ति में कितनी करुणा है! सारे जन्मों में करुणा ही करुणा, करुणा ही करुणा। तभी तो लोक सेवा करेगा; नहीं तो कैसे करेगा? और इस जीवन में भी करुणा ही करुणा, करुणा ही करुणा। महापरिनिर्वाण का समय नजदीक आ रहा है। तीन महीने पहले यह घोषणा की, जबकि वे वैशाली में थे; कि आगामी 'वैशाख पूर्णिमा' यानी, तीन महीने के बाद इस शरीर की च्युति होगी। वहां से चलते-चलते यहां तक आये। रास्ते में एक दिन पहले 'चुंद' नामक गृहस्थ ने उनको भोजन दान दिया, और वह भोजन ऐसे कुक्कुरमुत्तों का था, जो जहरीले होते हैं। उन्होंने स्वयं तो खाया पर भिक्षुओं को देने से रोका -- और कोई न खाय। उनका तो 'परिनिर्वाण' होना ही था, पर करुणा जागती है उस चुंद पर; अरे, मेरे बाद कहीं लोग चुंद को बुरा न कहें -- अरे, चुंद! तू ऐसा पागल है! तूने ऐसा भोजन दिया कि भगवान का शरीर छूटा - कहीं लोग ऐसा न कहें, इसलिए आनंद से कहते हैं - मेरे बाद तू जाकर कहना उस चुंद को कि तूने बहुत बड़ा पुण्य का काम किया। सम्यक संबुद्ध बनने के पहले का जो भोजन होता है, बहुत पुण्यशाली होता है; जैसे सुजाता ने उन्हें खीर खिलायी, वह सम्यक संबुद्ध बनने के पहले, और जो अंतिम भोजन होता है वह भी उतना ही पुण्यशाली होता है। इतने जन्मों तक भव-संसरण करते-करते अब यह भव-चक्र समाप्त होगा, तो बहुत पुण्य है। उसके मन पर कहीं आघात न लगे। लोग भी उसके बारे में कोई ऐसी बात न करें। कितनी करुणा है! कितनी करुणा है!

यहां एक जुड़वा साल वृक्ष के नीचे रुक कर कहा, बस यहीं मैं लेटूंगा। आनंद! सुबह होते-होते प्राण जायेंगे, महापरिनिर्वाण होगा। आस-पास मल्लों का गणराज्य, उनको जब पता लगेगा कि भगवान हमारे गणराज्य के इतने समीप आये और यहां उनका शरीर छूटा, आकर वे अंतिम बार दर्शन करते, उनको यह मौका ही नहीं मिला तो वे तुझे लांछित करेंगे। तू जा! उनको खबर कर दे। आनंद गया, सारे नगर में खबर कर दी - कल सुबह होते-होते भगवान बुद्ध 'महापरिनिर्वाण' को प्राप्त होंगे।

लोग वहां आने लगे। इतने लोग आ रहे हैं, नमस्कार करने के लिये। आनंद ने इतनी बड़ी भीड़ देखा तो कहा भाई! कुछ लोग इकट्ठे होकर, बस, नमस्कार करो और चले जाओ! समय कहां? नमस्कार करो और चले जाओ! इस भीड़ में 'सुभद्र' नाम का एक व्यक्ति आता है। वह कहता है कि मैं केवल नमस्कार करने नहीं आया, मुझे तो उनसे विद्या सीखनी है। उनके बाद न जाने तुम लोग ठीक से समझा सको कि नहीं समझा सको; सिखा सको कि न सिखा सको। आनंद कहता है कि तू पागल हुआ है, अब उनका शरीर छोड़ने का समय है, ऐसे समय तू उनको तंग मत कर, आराम से उनको प्राण छोड़ने दे। वह कहता है -- नहीं, मुझे तो उनसे धर्म सीखना है। ये कहता है -- नहीं, तुझे नमस्कार करना हो तो कर, नहीं तो बगल हो जा, औरों को आने दे आगे। ये शब्द भगवान के कान में पड़ते हैं। कोई प्यासा व्यक्ति गंगा के पास आये और दूसरा उसका हाथ पकड़े, पानी मत पी लेना, गंगा को नमस्कार करके चला जा, तो गंगा में बाढ़ आती है - अरे, आनंद! आने दे। यह योग्य पात्र है। इसको मुझे धर्म सिखाने दे, और सुभद्र को धर्म सिखाते हैं। जो व्यक्ति अपना शरीर छोड़ते-छोड़ते इतनी करुणा से भरा है -- अरे, एक व्यक्ति का तो कल्याण हो जाय! इसका कल्याण हो जाय! ये लक्षण हैं महापुरुष के; वे करुणा से भरे रहते हैं।

इस स्थान पर और भी महत्त्वपूर्ण घटनायें घटीं। एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना यह घटी कि किसी ने पूछ लिया-- "महाराज! आपके जाने के बाद आपका उत्तराधिकारी कौन होगा?" कौन होगा रे! उत्तराधिकारी कौन होगा? उत्तराधिकारी धर्म होगा। जो धर्म मैंने सिखाया है, वह तुम्हारा आचार्य होगा; वह तुम्हारा गुरु होगा। जहां किसी एक व्यक्ति को उत्तराधिकारी बना दिया तो पंडागिरी चलेगी, पुरोहितगिरी चलेगी। व्यक्ति जब तक उस ऊंची अवस्था तक न पहुँचा हो, तब तक एक नशा रहता है कि जैसे सब भगवान बुद्ध का सम्मान करते हैं, वैसे ही अब मैं उनकी गद्दी पर बैठा तो मेरा भी वैसा ही सम्मान होना चाहिये, यह नशा धर्म को ले डूबता है। इसलिए कोई उत्तराधिकारी नहीं, धर्म ही उत्तराधिकारी है। धर्म का जो पालन करेगा, वह अपना कल्याण कर लेगा। धर्म अच्छी तरह समझा दिया गया, और क्या चाहिये?

एक और महत्त्वपूर्ण घटना घटी - उनका 'महापरिनिर्वाण' हुआ तो उनका प्रमुख शिष्य 'महाकाश्यप', अभी जरा दूर है, सात दिन की यात्रा करेगा तब पहुँचेगा। उसके आने तक उनके शरीर की दाह क्रिया नहीं की गयी। काश्यप अपने ५०० साथियों के साथ चला आ रहा है। उनमें से 'सुभद्र' नामक नया-नया भिक्षु, बहुत बूढ़ा, उम्र बड़ी पर धर्म में बहुत कच्चा, वह बड़ा खुश होता है -- अच्छा हुआ वह बूढ़ा मर गया। नाक में दम कर रखा था- ऐसा करो, ऐसा मत करो,...। अब वह चला गया, हमें छूट है, हम जो चाहे सो करेंगे। हमारे मन में जो आये वह करेंगे, मन में नहीं आया वह नहीं करेंगे। काश्यप ने देखा -- भले, सारा संघ बहुत पका हुआ है, पर संघ में ऐसे पागल लोग भी हैं। उनके जाने के बाद तो इस तरह के लोग भगवान ने जो नहीं कहा, उनके मुँह में वह डाल देगें-- भगवान ने ऐसा कहा, ऐसा कहा, ऐसा कहा...। और जो कहा, वह उसके अनुकूल नहीं है, तो उसको निकाल देंगे, तो ऐसे लोग धर्म को नष्ट कर देंगे। तब क्या किया जाय? हां, भगवान की जितनी वाणी है, वह सारी संगृहीत कर ली जाय।

सात दिन बाद जब दाहकर्म, क्रियाकर्म पूरा हुआ, उसके तीन महीने बाद जहां हम राजगीर गये थे, वहां कुछ लोग ऊपर 'सप्तपर्णी गुफा' में गये होंगे। वहां पर पहला संगायन हुआ था। ५०० ऐसे भिक्षुओं ने जो बुद्ध के बहुत समीप थे और अरहंत थे, उन्होंने बैठ करके बुद्ध-वाणी का संगायन किया। बुद्ध ने क्या कहा? ऐसा कहा, ऐसा कहा; सब कहेंगे- हां ऐसा कहा, ऐसा कहा...। विनय की शिक्षा, यानी, भिक्षुओं के नियम की जो शिक्षा थी; उसे 'उपालि', जो भिक्षुओं का बड़ा आचार्य था, और भिक्षुओं के नियमों को खूब जानता था, उसने उसका पाठ किया, बाकी सबने स्वीकार किया। आनंद को बाकी सारी बातों का ज्ञान था, उसने पाठ किया, लोगों ने स्वीकार किया। यह बहुत बड़ी बात हुई! उन दिनों कोई प्रिंटिंग प्रेस तो थी नहीं, कागज भी नहीं थे। इतना विशाल साहित्य, थोड़ा नहीं। इतना विशाल साहित्य लोग याद ही तो करेंगे, और याद रखेंगे। अन्यथा कोई कहेगा - नहीं, मुझको तो ऐसा स्मरण है; कोई कहेगा ऐसा..., तो बिगड़ जायगा सारा का सारा। ओथेंटिक क्या है? प्रामाणिक क्या है? ऐसा हम मिल करके तय कर लें - भगवान की यह प्रामाणिक वाणी है। इसमें कोई अपनी ओर से जोड़े नहीं, अपनी ओर से निकाले नहीं। यह पहली संगीति, इसने धर्म को जीवित रखा। इसके बाद तो यह परम्परा चल पड़ी। फिर दूसरी संगीति हुई, तीसरी हुई, चौथी हुई, पांचवी हुई, और अब भगवान बुद्ध के २५०० वर्षों के बाद, बर्मा में छठी संगीति हुई। इस समय जो बुद्ध वाणी, जो तिपिटक, पालि भाषा में, संसार में जहां-जहां था; पांच देशों में ही था-- बर्मा, श्रीलंका, थाईलैंड, कम्बोडिया और लाओस में। वहां के २५०० विद्वान भिक्षुओं को इकट्ठा किया। चलो! हम पारायण करते हैं बुद्ध-वाणी का, सब का एक ही मत होना चाहिये। ....क्रमशः...

# साधना एवं बुद्‌ध जयंती

(साधकों के साथ पत्राचार, दि. 9-4-1977)

प्रिय ईश्वरचंद, सप्रेम मंगलकामना।

तुम्हारा 30 मार्च का पत्र मिला। तुम सब यथाशक्ति विपश्यना का अभ्यास कर रहे हो और रविवार को सामूहिक साधना भी, जिससे सुख-शांति और प्रसन्नता की अनुभूति होती है, यह जान कर मन संतुष्ट-प्रसन्न हुआ।

यह सच है कि गृहस्थ जीवन में अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव आते हैं जो विपश्यना में पुष्ट होने में कठिनाई पैदा करते प्रतीत होते हैं। लेकिन इन कष्टों से जूझते हुए घुटने नहीं टेकना ही वस्तुतः विपश्यना साधना को सुदृढ़ करना हैं। गृहस्थ जीवन से घबराना उचित नहीं। इसमें कोई संदेह नहीं कि घर से बेघर होकर आदमी जब गृहस्थ की सारी जिम्मेदारियों को उतार फेंकता है तब उसे अंतर्मुखी होकर साधना के अभ्यास के लिए अधिक अवसर मिलता है। उसकी अनेक कठिनाइयां अपने आप दूर हो जाती हैं। लेकिन जिस समाज में गृहस्थों में वस्तुतः धर्म नहीं जागा हो, उस समाज में कोई व्यक्ति संन्यास ले कर अपना मंगल साधना चाहे तो यह भी सरल नहीं है। उस क्षेत्र में भी कठिनाइयां सामने आती हैं। ऐसी स्थिति में बाधाओं का सामना करते हुए गृहस्थ जीवन में ही धीरे-धीरे धर्म-पथ पर आगे बढ़ते जाना चाहिए।

नए संस्कार बनने बिल्कुल बंद हो जायँ, ऐसा कोई चमत्कार नहीं हो जाता। सारा अभ्यास इसी दिशा की ओर ले जाने के लिए है कि कुछ क्षण तो ऐसे आने लगें जिनमें सही माने में नए संस्कार नहीं बना रहे हैं। ऐसे क्षण प्रभूत मात्रा में पुराने संस्कारों का क्षय करने में स्वतः ही कारण बन जाते हैं।

सांसारिक जीवन में साधक को व्यावहारिक दृष्टिकोण रखना चाहिए। किन्हीं सांसारिक कठिनाइयों के कारण या किसी के अन्याय, अनीतिपूर्ण व्यवहार के कारण यदि हमारी सुरक्षा खतरे में हो तो एक सीमा तक क्षांति (सहनशीलता) का भाव रखना आवश्यक है। परंतु इसके बाद एक समय ऐसा भी आता है जबकि भावावेश के अधीन हुए बिना दृढ़तापूर्वक अनीति और अन्याय का सामना करना होता है। किसी के प्रति द्‌वेष-दुर्भावना रखते हुए नहीं, बल्कि उसकी भी मंगलकामना चाहते हुए ही।

विश्वास है उस क्षेत्र के सभी साधक विघ्न-बाधाओं के बावजूद धर्म का अभ्यास नहीं छोड़ेंगे। अंततोगत्वा सफलता मिलेगी ही। हर संघर्ष हमें धर्म में पुष्ट करने वाला हो, हर असफलता हमें और दृढ़ता के साथ धर्म-पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा और पराक्रम प्रदान करने वाली हो, इस उत्साह के साथ कदम-कदम आगे बढ़ते ही जाना चाहिए।

सचमुच धर्म की अनंत शक्तियां हमारी ओर दौड़ी चली आती हैं। जब-जब हम अपने मन को धर्म-पथ पर चलने के लिए तैयार करने का संकल्प करते हैं, तब-तब ये सारी शक्तियां हमारे लिए पाथेय बन जाती हैं।

साधक वहां धूमधाम से बुद्‌ध-जयंती मनाना चाहते हैं और उस समय स्वयं-शिविर लगाना चाहते हैं। मैं समझता हूं बुद्‌ध-जयंती मनाए जाने का इससे बेहतर तरीका और कुछ हो ही नहीं सकता। बुद्‌ध-जयंती भगवान बुद्‌ध के सम्मान के लिए है, उनके पूजन के लिए है। और उनका पूजन इसी प्रकार किया जाना चाहिए– इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया बुद्‌धं पूजेमि।

धर्म और अनुधर्म का प्रतिपादन करते हुए ही हम बुद्‌ध का सम्मान कर सकते हैं, बुद्‌ध की सही वंदना करते हैं, बुद्‌ध का सही पूजन करते हैं, और इसलिए सही माने में बुद्‌ध-जयंती मनाते हैं। जो लोग इस अवसर पर एकत्र हो रहे हों उनसे मेरा यही संदेश कहना चाहिए कि बुद्‌ध-जयंती का अवसर अन्य त्यौहारों की तरह आमोद-प्रमोद भरे उत्सव-समारोह जैसा नहीं हो जाना चाहिए। केवल वाणी-विलास और बुद्‌धि-विलास तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि लोगों के मन में यह प्रेरणा जागनी चाहिए कि हम शील, समाधि और प्रज्ञा में अधिक से अधिक पुष्ट हों, तभी बुद्‌ध-जयंती मनाने का महत्त्व है, तो ही बुद्‌ध-जयंती मनाने की सफलता है।

सभी साधकों के प्रति समस्त मंगल मैत्री लिए हुए,

साशिष, सत्यनारायण गोयन्का

---

## *मृत्यु मंगल*

• लखनऊ विपश्यना केंद्र के केंद्र-आचार्य श्री रुद्र दत्त तिवारी गत 19 मार्च, 2017 को दिवंगत हुए। वे 90 वर्ष की पकी आयु में भी अत्यंत सक्रिय और केंद्र पर रहते हुए अपने सभी कार्य स्वयं करते थे। उत्तर प्रदेश में पुलिस अधीक्षक रहते हुए राष्ट्रपति पदक प्राप्त किया था और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। अवकाश प्राप्ति के पश्चात विपश्यना से जुड़े तो इसी के होकर रह गए। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी धर्मपत्नी भी विपश्यना से जुड़ गई और दोनों विपश्यना के आचार्य नियुक्त हुए। दोनों ने ही साधकों की बड़ी सेवा की। पूज्य गुरुजी ने उन्हें लखनऊ केंद्र की जिम्मेदारी सौंपी, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। उसी दिन वहां शिविर प्रारंभ होने वाला था, सुबह 10:00 बजे बैठ करके साधकों के फार्म देख रहे थे। कहा, थोड़ी तबीयत नरम लग रही है और जब तक कोई ट्रस्टी वहां पहुंचते, कुर्सी पर बैठे-बैठे ही उन्होंने शांतिपूर्वक शरीर छोड़ दिया। ऐसे साधक को प्राप्त करके विपश्यना भी धन्य हुई। उनके प्रति विपश्यना परिवार की मंगलमय मैत्री।

• इसी प्रकार नागपुर के वरिष्ठ सहायक आचार्य 95 वर्षीय श्री गोवर्धन दास केला 16 मार्च, 2017 को दिवंगत हुए। 1969 में ही वे विपश्यना के संपर्क में आ गये थे और नागपुर में विपश्यना के प्रारंभिक विकास और प्रचार-प्रसार में उनका बहुत बड़ा सहयोग रहा। 1975 में वहां के एम.एल.ए. हॉस्टल में विपश्यना का पहला शिविर लगवाया था। 1999 में विपश्यना के वरिष्ठ स. आचार्य बने और अंतिम क्षण तक वे धर्म की सेवा ही करते रहे। उन्होंने शांतिपूर्वक साधना करते हुए शरीर छोड़ा। विपश्यी परिवार की मंगल कामनाएं।

## विपश्यना समुपदेशन एवं विशोधन केंद्र - मुंबई

"वि०स०वि०कें०-मुंबई" बृहन्मुंबई महानगर पालिका के एक आंतरिक विपश्यना संसाधन श्रोत के रूप में सेवा दे रहा है और इसका प्रबंधन विपश्यना विशोधन विन्यास के सहयोग से किया जा रहा है।

इस केंद्र की स्थापना सिद्‌धार्थ महानगरपालिका सर्वसाधारण रुग्णालय के मानसिक चिकित्सा विभाग के समकक्ष की गयी है और इसका पता और फोन निम्न प्रकार से है: शास्त्री नगर, गोरेगांव (प०), मुंबई-400104; फोन: 28766885 एक्सटेंशन: 219; सम्पर्क (केवल कार्य-दिवसों पर): दोपहर 12 से 1 तक । यहाँ निम्नलिखित सेवायें उपलब्ध हैं:

[A] **विपश्यी साधकों के लिये:** (1) **"स्वयं द्‌वारा अभ्यास":** केवल कार्य-दिवसों पर, सुबह 9 से दोपहर 1 तक; (2) **"एक घंटे की सामूहिक साधना":** प्रत्येक दूसरे और चौथे रविवार, सुबह 8.30 से 9.30 तक; (3) **"एक दिवसीय शिविर"**: महीने के पहले रविवार, सुबह 10.30 से शाम 5.30 तक; [B] **"सब के लिये लघु-आनापान शिविर":** महीने के दूसरे रविवार, सुबह 9.30 से 10.30 तक; [C] **"बच्चों के लिए एक दिवसीय शिविर":** महीने के तीसरे रविवार, सुबह 8.30 से दोपहर 2.30 तक; [D] **"धम्म-सेवकों की सभा":** महीने के चौथे रविवार, सुबह 9.30 से 10.30 तक;

---

### अल्पकालीन/लघु पाठ्‌यक्रम – विपश्यना की भूमिका

विपश्यना विशोधन विन्यास, गोराई, मुंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रति सप्ताह ३ घंटे की पढ़ाई, **अवधि**– ३ जून २०१७ से १९ अगस्त २०१७ **योग्यता**– १२वीं कक्षा उत्तीर्ण, पूर्ण जानकारी के लिए देखें:

http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses.

Registered No. NSK/235/2015-2017

**पालि की प्रारंभिक शिक्षा तथा सघन डिप्लोमा पाठ्यक्रम व बुद्ध-शिक्षा का प्रतिपादन**

विपश्यना विशोधन विन्यास तथा दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में २०१७-१८ में एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम होगा जिसका विषय होगा बुद्ध की शिक्षा का सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक पक्ष विपश्यना का जीवन में उपयोग। आवेदन पत्रः ३ जुलाई से ८ जुलाई, २०१७ तक (रविवार को छोड़कर) ११ बजे से २ बजे के बीच, दर्शन विभाग, ज्ञानेश्वर भवन, मुंबई विश्व विद्यालय, विद्यानगरी, कालीना कॅम्पस, सांताक्रुज (पू.) मुंबई- ४०००९८, टेलि.: ०२२-२६५२७३३७ से प्राप्त किया जा सकता है। **पाठ्यक्रम की अवधिः** १५ जुलाई २०१७ से मार्च २०१८ तक, प्रत्येक शनिवार को २:३० बजे से ६:३० शाम तक, **योग्यताः** आवेदक कम से कम १२-वीं कक्षा उत्तीर्ण हों। उनके लिए दीवाली की छुट्टी में एक दस-दिवसीय विपश्यना शिविर करना अनिवार्य होगा। **अधिक जानकारी के लिए–** (१) विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडाः कार्यालय ०२२-३३७४७५६०, (२) श्रीमती अलका वेंगुर्लेकर - ९८२०५८३४४०.(३) Mrs. Archana Deshpande - 9869007040.

**नये उत्तरदायित्त्व**

***वरिष्ठ सहायक आचार्य***

**१. श्री लक्ष्मणदास दधीचि, उत्तरांचल**
**२. श्रीमती सीमा शर्मा, नई दिल्ली**
**३. श्री रामपाल सिंह चौहान, हरियाणा**
**४. श्री महेश कुमार गुप्ता, गाजियाबाद**
5. Mrs. Chintha Samaranayake, Sri Lanka

**नव नियुक्तियां**

**सहायक आचार्य**

**१. श्री जितुभाई शाह, सूरत**
**२. श्री विजय गायकवाड, पुणे**
**३. कु. अंजु गोलेचा, सिकंदराबाद**
**४. श्री निरंजन सिन्हा, झारखंड**
**५. श्री प्रकाशचंद झुनझुनवाला, अकोला**
6. U Aung Kyaw Nyan Wai, Myanmar
7. Daw Win Win Khaing, Myanmar

**भिक्षु आचार्य**

१. आ. भिक्षु पञ्ञा रतन, नांदेड

**बालशिविर शिक्षक**

१. श्री यशवंत कापडी, गोवा
२. डॉ. साइमन सिल्वा, गोवा
३. श्रीमती बर्नाडेट डिसूजा, गोवा
४. श्री विष्णु सर्वगोड, पुणे
५. श्री कंचन खरात, पुणे

## *पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा*

**प्रत्येक वर्ष ''विश्व विपश्यना पगोडा'', गोराई- बोरीवली (मुंबई) में एक दिवसीय महाशिविरों का आयोजन होता रहता है। उनमें शामिल होने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-विश्राम की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना है कि पगोडा-परिसर में अलग से एक ३-४ मंजिला भवन का निर्माण किया जाय जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आने वाले साधकों के लिए कुछ एकाकी और कुछ सामूहिक निवास की व्यवस्था की जा सके ताकि रात्रि-विश्राम के बाद वे सुबह आराम से उठ कर भली प्रकार साधना का लाभ उठा सकें। तदर्थ जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे निम्न पते पर संपर्क करें:--**

**1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Vipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org**

---

## ग्लोबल विपश्यना पगोडा में २०१७ के एक-दिवसीय महाशिविर

**रविवार, १४ मई को बुद्ध पूर्णिमा** के उपलक्ष्य में; **रविवार, ९ जुलाई आषाढ़ पूर्णिमा** (धर्मचक्र प्रवर्तन); तथा रविवार, **१ अक्टूबर शरद पूर्णिमा** एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के** उपलक्ष्य में। **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक* ३ बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं।

**संपर्कः** 022-28451170, 022-62427544, 8291894644 - Extn. 9,
(**फोन बुकिंगः ११** से **५** बजे तक, प्रतिदिन)

**Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org**

## दोहे धर्म के

**यदि संबुद्ध न खोजते, शुद्ध धरम का पंथ।**
**तो मिथ्या जंजाल में, होता जीवन अंत॥**

**याद करूं जब बुद्ध की, करुणा अमित अपार।**
**तन-मन पुलकित हो उठे, चित छाये आभार॥**

**यही बुद्ध की वंदना, विनय नमन आभार।**
**जागे बोध अनित्य का, होवें दूर विकार॥**

**चित्त निपट निर्मल रहे, रहूं पाप से दूर।**
**यही बुद्ध की वंदना, रहे धरम भरपूर॥**


**केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड**

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- ४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net

***की मंगल कामनाओं सहित***


## दूहा धर्म रा

**चालत-चालत धरम पथ, चित्त बिमल जदि होय।**
**तो सम्यक संबुध री, सही बंदना सोय॥**

**या हि बुद्ध री बंदना, यो हि बुद्ध सम्मान।**
**प्रग्या करुणा प्यार स्यूं, भरल्यां तन मन प्राण॥**

**या हि बुद्ध री बंदना, अरहत हेत प्रणाम।**
**द्वेस द्रोह सारा छुटै, चित्त हुवै निस्काम॥**

**आ ही साची बंदगी, नमस्कार परणाम।**
**जीवन जीऊं धरम रो, करूं न कूड़ा काम॥**


**मोरया ट्रेडिंग कंपनी**

सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in

***की मंगल कामनाओं सहित***


'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२ ४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-४२२ ००७. **बुद्धवर्ष २५६०, चैत्र पूर्णिमा, ११ अप्रेल, २०१७**

**वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. ५००/-, US $ 100. 'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017**

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

**DATE OF PRINTING: 1 APRIL, 2017, DATE OF PUBLICATION: 11 APRIL, 2017**

If not delivered please return to:-
**विपश्यना विशोधन विन्यास**
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
**फोन :** (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२,
२४३२३८. **फैक्स :** (०२५५३) २४४१७६
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org